# विपश्यना

[साधकों का मासिक प्रेरणापत्र]

रजि. नं. १९१५६/७१ पोस्टल रजि. नं. NSK–64

वर्ष ८ • बम्बई • बुद्धवर्ष २५२३ • वैशाख पूर्णिमा [शक] • दि. १२–५–१९७९ • अंक ११


## धर्म–पारायण

भगवान गौतम बुद्ध के जीवनकाल की एक धर्मप्रबोधनी घटना।

कोशल प्रदेश के राजा प्रसेनजित का पुरोहित ब्राह्मण बावरी वृद्धावस्था में गृह त्यागकर संन्यासी हो गया और श्रावस्ती नगर छोड़कर उत्तरापथ से दक्षिणापथ की ओर चल पड़ा। आन्ध्रप्रदेश के अश्वक और अलक राज्यों के बीच बहने वाली गोदावरी नदी के तट पर उसने अपना आश्रम बनाया। भिक्षा और फल-मूल ग्रहण करता हुआ संन्यासी बावरी वहीं तापस का जीवन जीने लगा। जब उसकी उम्र १०० वर्ष की हुई तब उसने पास के गांव से कुछ धन प्राप्त किया और महान यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ पूरा करने पर जो धन बचा उसे लोगों में बाँट दिया। तत्पश्चात् उसके पास एक याचक ब्राह्मण ५०० मुद्राका दान मांगने आया। बावरी ने विनीत भावसे असमर्थता प्रकट की। असंतुष्ट याचक कुपित हुआ और बावरी को यह श्राप देकर चला गया कि ७ दिनों में उसका सिर सात खंडों में विखंडित होकर गिर पड़ेगा।

वृद्ध बावरी अत्यंत उदास और खिन्न-मन हो उठा। न भोजन अच्छा लगे, न ध्यान में ही मन लगे। तभी उसके एक हितैषी ने उसे सांत्वना के शब्द कहे कि किसी ढोंगी के श्राप से तुम्हें चिंतित नहीं होना चाहिए। कौवों के श्राप से हाथी नहीं मरा करते। तुमने कोई दोष नहीं किया। किसी धन-लोलुप अज्ञानी का अभिशाप तुम्हारा क्या बिगाड़ सकेगा भला। जिस व्यक्ति को यही नहीं पता कि सही माने में सिर क्या है और सिर का विखंडित होना क्या है? वह अज्ञानी ही तो है। बूढ़े बावरी को सांत्वना मिली। पर उसके मन में जिज्ञासा जागी और पूछ बैठा कि यह सिर और सिर के विखंडित होने का और भी कोई अर्थ होता है क्या? हो तो समझाओ!

आगन्तुक ने कहा कि इसे कोई सम्यक् सम्बुद्ध ही ठीक से समझा सकते हैं और सौभाग्य से इस समय सम्यक् सम्बुद्ध उत्पन्न हैं। उन्हीं से जा पूछो। और उनका परिचय देते हुए कहा :—

*पुरा कपिलवत्थुम्हा, निक्खन्तो लोकनायको।*
*अपच्चो ओक्काकराजस्स, सक्यपुत्तो पभंकरो॥*

कुछ वर्ष पूर्व इक्ष्वाकुवंशीय प्रभाकारी शाक्य-पुत्र ने कपिलवस्तु से गृह त्यागकर अभिनिष्क्रमण किया।

## धम्म वाणी

धम्मानुधम्म पटिपत्तिया बुद्धं पूजेमि॥
धम्मानुधम्म पटिपत्तिया धम्मं पूजेमि॥
धम्मानुधम्म पटिपत्तिया संघं पूजेमि॥

धर्मानुधर्म का प्रतिपादन कर मैं बुद्ध की पूजा करता हूं।
धर्मानुधर्म का प्रतिपादन कर मैं धर्म की पूजा करता हूं।
धर्मानुधर्म का प्रतिपादन कर मैं संघ की पूजा करता हूं।

---

*सो हि ब्राह्मण सम्बुद्धो, सब्बधम्मान पारगू।*
*सब्बाभिञ्ञाबलप्पत्तो, सब्बधम्मेसु चक्खुमा।*
*सब्बकम्मक्खयं पत्तो, विमुत्तो उपधिसंखये॥*

हे ब्राह्मण, वही सम्बुद्ध हो गए हैं। सभी धर्मों में पारंगत, चक्षुष्मान, सभी अभिज्ञानबल संपन्न हैं। उनके सारे कर्म क्षय हो गए हैं। वे कृतकृत्य हैं। उन्होंने दुःखों की जड़ें उखाड़ ली हैं। वे विमुक्त हैं।

*बुद्धो सो भगवा लोके, धम्मं देसेति चक्खुमा।*
*तं त्वं गत्वान पुच्छस्सु, सो ते तं व्याकरिस्सति॥*

वे चक्षुष्मान भगवान बुद्ध, लोक में धर्म का उपदेश दे रहे हैं। तुम उनके पास जाकर पूछो। वे तुम्हें विस्तार से समझायेंगे।

*सब्बुद्धो'ति वचो सुत्वा, उदग्गो बावरी अहु।*
*सोकस्स तनुका आसि, पीतिं च विपुलं लभि॥*

"सम्बुद्ध" शब्द सुनते ही बावरी प्रफुल्लित हो उठा। उसका शोक दूर हुआ। वह विपुल प्रीति-प्रमोद से पुलकित हो उठा।

यों रोमांच-पुलक से भरे श्रद्धाबहुल बावरी ने आतुरता से पूछा :-

*कतमस्मिं गामे निगमस्मिं वा पुन, कतमस्मिं वा जनपदे लोकनाथो?*

वे लोकनाथ भगवान बुद्ध इस समय किस गांव में है? किस निगम में हैं? किस जनपद में हैं?

*यत्थ गन्त्वा नमस्सेमु, सम्बुद्धं दिपदुत्तमं ॥*

जहां जाकर मैं उन द्विपद श्रेष्ठ बुद्ध को नमस्कार कर सकूं।

इस पर आगन्तुक ने बताया :–

*सावत्थियं कोसलमन्दिरे जिनो, पहूतपञ्ञो वरभूरिमेधसो।*
*सो सक्यपुंतो विधुरो अनासवो, मुद्धाधिपातस्स विदू नरासभो॥*

वे महाप्रज्ञ, परम मेधावी, भारमुक्त, आस्रवमुक्त, सिर-छेदन के ज्ञाता, नरवृषभ, शाक्यपुत्र भगवान जिन-बुद्ध इस समय कोशल देश के श्रावस्ती नगर में हैं।

शतायु बावरी आन्ध्रप्रदेश से कोशलप्रदेश की लंबी यात्रा कर सकने में स्वयं असमर्थ था। अतः उसने अपने प्रमुख शिष्यों को एकत्र कर उनसे कहा :–

*यस्सेसो दुल्लभो लोके, पातुभावो अभिण्हसो।*
*स्वज्ज लोकम्हि उप्पन्नो, सम्बुद्धो इति विस्सुतो।*
*खिप्पं गंत्वान सावत्थिं,पस्सव्हो दिपदुत्तमं॥*

लोक में जिनका सदा उत्पन्न होना दुर्लभ है, वे आज सम्बुद्ध के विरुद से प्रसिद्ध हो उत्पन्न हुए हैं। शीघ्र श्रावस्ती जाकर उन मनुज श्रेष्ठ के दर्शन करो।

इस प्रकार उसने अपने शिष्यों को बुद्ध के दर्शन कर उनसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए समुत्साहित किया। बावरी के जटा और मृगछाला-धारी सोलह प्रमुख शिष्य अजित, तिस्स मेत्तेय्य, पुन्नक, मेत्तगू, धोतक, उपसीव, नन्द, हेमक, तोदेय्य, कप्प, जातुकण्णी पंडित, भद्रायुध, उदय, ब्राह्मण पोसाल, मेधावी मोघराजा और महर्षि पींगिय जो सब के सब गणी थे, ध्यानी थे, पूर्व जीवन के पुण्यपारमी संपन्न थे, वर्तमान जीवन में लोक विश्रुत थे, वे सब अपने आचार्य बावरी को प्रणाम कर, उसकी प्रदक्षिणा कर उत्तर की ओर चल पड़े।

वे पहले अलक से पैठन आए और वहां से वर्तमान मध्यप्रदेश के महिष्मती, उज्जैन, गोधपुर, विदिसा (भेलसा), तुंगवन (तुंगेन) की यात्रा करते हुए वर्तमान उत्तर प्रदेश के कोशाम्बी (कोशम), साकेत (अयोध्या) होते हुए श्रावस्ती पहुंचे। वहां पहुंचने पर पता चला कि भगवान पूर्व की ओर मगध देश की चारिका के लिए चले गए हैं। अतः आगे यात्रा करते हुए सेतव्य, कपिलवस्तु, कुसीनारा और पावा से भोगनगर होते वैशाली पहुंचे और वहां से राजगिरि। वहीं के मनोरम पाषाण चैत्य पर भगवान बुद्ध के दर्शनलाभी हुए।

भगवान ने उनके गुरू बावरी के प्रश्न का समाधान करते हुए समझाया कि **अविद्या ही सिर है और श्रद्धा, वीर्य, स्मृति और समाधियुक्त प्रज्ञा (विद्या) द्वारा ही इस अविद्या का भेदन होता है।** सचमुच महज कपोल कल्पनाओं को धर्म मानने वाले अथवा पराए ज्ञान पर तर्क-वितर्कजन्य बुद्धिकिलोल को ही धर्म मानने वाले अविद्या के ही तो शिकार हैं। श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि के बल पर जब स्वयं अपनी प्रज्ञा जागती है और सत्य की प्रत्यक्षानुभूति होती है तो ही शिरच्छेदन होता है; अविद्या की खोल खंडित होती है। जिज्ञासु प्रश्नकर्ता संतुष्ट प्रसन्न हुए।

तदनन्तर उन सभी सोलह तपस्वियों ने एक–एक करके भगवान से धर्म संबंधी प्रश्न पूछे। भगवान ने संतोषजनक उत्तर दिए। ये प्रश्नोत्तर अत्यंत महिमामंडित हैं। प्रत्येक धर्मजिज्ञासु के लिए अपरिमित प्रेरणा–प्रदायक हैं, धर्मपथ प्रदर्शक हैं। इनके बारे में ठीक ही कहा गया है। :–

*एकमेकस्स पण्हस्स, यथा बुद्धेन देसितं।*
*तथा यो पटिपज्जेय्य, गच्छे पारं अपारतो॥*

एक–एक प्रश्न का उत्तर देते हुए भगवान ने जो उपदेश दिए, उसका प्रतिपादन करने वाला इस पार से उस पार चला जायेगा।

*मग्गो सो पारं गमनाय, तस्मा पारायणं इति॥*

यह पार जाने का मार्ग है। इसीलिए पारायण कहा जाता है।

सच ही तो है। धर्म पारायण ही तो है। पारायण का अर्थ महज पाठ कर लेना नहीं होता। उसका प्रतिपादन कर पार उतर जाना ही पारायण है। और उन सोलह तपस्वियों ने यही किया। उनके प्रश्नोत्तर केवल बुद्धिविलास के लिए नहीं थे। उनमें से किसी एक प्रश्न का भी अर्थ जानकर, धर्म जानकर यदि कोई धर्मानुधर्म का प्रतिपादन कर ले याने धारण कर ले तो जरा–मरण से पार चला जाय। **पण्हस्स अत्थं अञ्ञाय, धम्मं अञ्ञाय, धम्मानुधम्मं पटिपज्जेय, गच्छेय्येव जरा मरणस्स पारं।** प्रश्नोत्तर इसी हेतु हुए। पारायण हेतु हुए। पार उतरने के लिए हुए।

इसीलिए जब उनमें से एक (ऋषि धोतक) ने भक्तिभाव-विभोर हो भगवान से कहा :—

*पस्सामहं देवमनुस्सलोके, अकिञ्चनं ब्राह्मण इरियमानं।*
*तं तं नमस्सामि समन्तचक्खु, पमुञ्च मं सक्क कथंकथाहि॥*

देव मनुष्यों के बीच आप जैसे अपरिग्रही ब्राह्मण को विचरण करते हुए देखता हूं। हे समन्त चक्षु! मैं आपको नमस्कार करता हूं। हे शक्र! मुझे संशयों से मुक्त करें।

तो भगवान ने कहा :–

*नाहं गमिस्सामि पमोचनाय, कथंकथिं धोतक कञ्चि लोके।*
*धम्मं च सेट्ठं अभिजानमानो, एवं तुवं ओघमिमं तरेसि॥*

हे धोतक! किसी संशयी को मैं मुक्त करने नहीं जाता। जब तुम स्वयं श्रेष्ठ धर्म को अनुभूति द्वारा जान लोगे तो स्वतः इस बाढ़ से पार हो जाओगे।

यहां पर 'अभिजानमानो' शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। स्वयं अनुभूति द्वारा जानने को ही **अभिजानमानो** कहा जाता था। मन के संशय यदि अंधश्रद्धा के बल पर दूर किए जाँय तो अभिजानन नहीं हुआ। इसी प्रकार केवल तर्क-वितर्क के बल पर दूर किये जाँय तो भी अभिजानन नहीं हुआ। इन दोनों के परे प्रत्यक्षानुभूति द्वारा जानना ही बुद्ध मंतव्य है। वही वास्तविक **अभिजानमानो** है। इसी के द्वारा **ओघमिमं तरेसि** होता है। सही माने में यही पारायण है।

इन्हीं में का एक साधक महर्षि पिंगीय कहता है, भगवान के संपर्क में आनेसे पहले तो सदा यही सुनता आया था – **इच्चासि इति भविस्सति** याने ऐसा था। ऐसा होगा। वह जो सुना करता था सो तो काल्पनिक ही काल्पनिक था। **सब्बेते इतिहेतिहं** अंधविश्वासों एवं परंपरागत मान्यताओं से भरी हुई कोरी बातें ही बातें थी। अथवा **सब्बं तं तक्कवद्धनं**--सब का सब तर्क-वितर्क के मायाजाल से भरा हुआ बुद्धिकिलोल ही बुद्धिकिलोल था, बुद्धिविलास ही बुद्धिविलास था। वास्तविकता कहां थी? प्रत्यक्षानुभूति कहां थी? परन्तु अब धन्यता प्राप्त हुई जो कि :–

*यो मे धम्ममदेसेसि संदिट्ठिकमकालिकं।*
*तण्हक्खयमनीतिकं, यस्स नत्थि उपमा क्वचि॥*

अब जो धर्म मुझे सिखाया गया है, यह तो सांदृष्टिक है याने अनुभूतिजन्य है। "ऐसा हुआ था, ऐसा हुआ था" की कोरी कल्पना नहीं है। अकालिक है याने तत्काल फल देने वाला है। "ऐसा होगा, ऐसा होगा" की मिथ्या मृगतृष्णा नहीं है। यहीं इसी जीवन में तृष्णा का क्षय और दुःख का विनाश करने वाला है। जिन्होंने यह सिखाया उनकी कोई उपमा नहीं।

जिन भगवान ने सिखाया, उन्होंने भी स्वयं जानकर ही सिखाया अंधश्रद्धा अथवा बुद्धि-विलास के आधार पर नहीं।

*यथा अद्दक्खि तथा अक्खासि, विमलो भूरिमेधसा।*
*निक्कामो निब्बनो नाथो, किस्स हेतु मुसा भणे॥*

निर्मल महाप्रज्ञ ने जैसा देखा, वैसे बताया। नाथ निष्काम हैं, वितृष्ण हैं। वे असत्य क्यों बोलेंगे भला?

और उन्होंने जो कुछ सिखाया, वह साधकों को जानने के लिए ही सिखाया। महज मानने के लिए नहीं। धर्म जानने के लिए ही है। स्वयं साक्षात्कार करने के लिए है। इसीलिए सांदृष्टिक है, इसीलिए अकालिक है। यहीं, इसी जीवन में फलदायी है।

● ● ●

साधकों! आज बुद्ध जयंती है। इस पुण्य अवसर पर धर्मानुधर्म के प्रतिपादन द्वारा ही बुद्ध-पूजन करें। बुद्ध वंदना करें। भगवान के बताए हुए मार्ग की केवल चर्चा करके ही न रह जाँय। उनके प्रति केवल श्रद्धा प्रकट करके ही न रह जाँय। बल्कि यथा शक्ति उसकी प्रत्यक्षानुभूति करें, उसे धारण करें। यहीं, इसी जीवन में लाभान्वित होने के लिए कटिबद्ध हों। शनैः शनैः आगे बढ़ते हुए सब दुःखों से पार हो जाँय और धर्म का पारायण नाम सार्थक करें। इसी में हमारा सच्चा श्रेय है, सच्चा कल्याण है।

कल्याण मित्र
**स. ना. गो.**

## साधकों के उद्‌गार

आस्ट्रेलिया की अध्यापिका साधिका नोरिस लिखती है कि विपश्यना साधना के प्रभाव से उस के सारे नशे-पते छूट गये हैं। उसे जो माइग्रेन–सिरदर्द का रोग था वह अब काबू में आ गया है। उसके जीवन में अधिक सहनशीलता आयी है और अब उसमें स्वार्थान्धता पहले से बहुत कम हुई है।

★

अमेरिका की साधिका लिंडा कलेम्ब्री दिसम्बर १९७२ में बनारस के शिविर में अपने पति जान कलेम्ब्री के साथ सम्मिलित हुई थी। लिखती है–"इस साधना के निश्चित प्रभाव से उसे सभी प्रकार के नशे के व्यसनों से सर्वथा मुक्ति मिली है और शारीरिक तथा मानसिक क्षेत्र में अथवा व्यवहार जगत में समस्याओं के समाधान में बहुत सुधार हुए हैं।"

★

आस्ट्रेलिया की साधिका ली एलन सोलोमन जो कि फरवरी १९७५ के भुज के शिविर में शामिल हुई थी, और अब तक नियमित साधना करती है, लिखती है, "धर्म में प्रवेश पाने के पूर्व अनेक प्रकार के नशे करने की आदी थी, लेकिन अब उनसे पूर्णतया छुटकारा हो गया है। और जीवन के हर क्षेत्र में बहुत बड़ा सुधार हुआ है।" भुज के शिविर में वह अपने पति श्री ग्रैगरी सोलोमन के साथ सम्मिलित हुई थी।

---

## विपश्यना विशेषांक

आगामी जून महिने में 'विपश्यना–विशेषांक' प्रकाशित होने की सूचना प्रसारित की गई थी। परन्तु संप्रति व्यवस्था संबंधी एवं अर्थ-संबंधी कठिनाइयों के कारण यह अंक कुछ महीनों के लिए स्थगित किया जा रहा है।

* * * *

'विशेषांक' होने के कारण यह अंक भी सभी ग्राहकों को भेजा जायेगा जब कि बहुत से ऐसे लोगों को भी 'विपश्यना' भेजी जाती है जो कि वार्षिक शुल्क भी नहीं दे पाते। अतः इस बढ़े हुए अतिरिक्त खर्च को वहन करने के लिए **समर्थ साधकों** की ओर से "विज्ञापन" (मंगल कामनाएं) आमंत्रित हैं, जिनकी दरें इस प्रकार निश्चित की गई हैं–

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीय कवर पृष्ठ (बाहरी भाग) – | | रुपए | १५००/– |
| द्वितीय कवर पृष्ठ (भीतरी भाग) – | | " | १०००/– |
| प्रथम कवर पृष्ठ | " | " | १०००/– |
| पूर्ण पृष्ठ | (अन्दर) | " | ८००/– |
| आधा पृष्ठ | " | " | ४००/– |
| चौथाई पृष्ठ | " | " | २००/– |

**भवतु सब्ब मंगल**

## आगामी शिविर

वर्षा ऋतु में अत्यधिक वर्षा के कारण इगतपुरी में सामान्य शिविर लगने संभव नहीं, फिर भी **स्वयं-शिविर** नियमित चलते रहेंगे। इसी प्रकार **जयपुर** तथा **हैदराबाद** के केंद्रों में भी स्वयं-शिविर की सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। जहां कहीं भी अनुकूल हो, पुराने साधक अपनी सुविधानुसार इन सहूलियतों का लाभ उठा सकते हैं।

स्वयं-शिविर भी सामान्य शिविर की भांति साधना एवं साधना केंद्रों की नियमावली के अनुरूप ही स्व-चालित शिविर होते हैं। अतः नियमावली का कड़ाई से पालन करना नितांत आवश्यक है। तभी आचार्य की अनुपस्थिति में भी सामान्य शिविर जैसा लाभ प्राप्त किया जा सकता है। अतः इच्छुक साधक निम्न पतों पर संपर्क करके अपने स्थान सुरक्षित कराकर ही गंतव्य स्थान पर जांय।

**संपर्क :** १) **व्यवस्थापक**, विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२ ४०३ (नासिक-महाराष्ट्र) फोन नं. ७६.

२) श्री श्यामसुन्दर मूंदडा, द्वारा-विपश्यना समिति, जी-१/ए, अशोक मार्ग, जयपुर- ३०२००१. फोन : कार्या.- ६५४१४
घर - ६३३२२

३) अ) श्री रतीलाल एम. मेहता, विपश्यना अन्तरराष्ट्रीय साधना केन्द्र, कुसुम नगर, हैदराबाद- ५०० ०३५ (आं. प्र.) — फोन : ५९२५९.

ब) श्री पूरनमल अग्रवाल, द्वारा- होटल राजधानी, सिद्दियम्बर बाजार, हैदराबाद- ५०० ०१२. — फोन : ५७५७१.
घर : ४१३८६.


**एक शुभेच्छुक**
की मंगल कामनाओं सहित

फोन नं. : २९६१३१.
**मेसर्स तोषणीवाल ब्रदर्स प्रा. लि.,**
१९८, जमशेदजी टाटा रोड, चर्चगेट, मुंबई- ४०० ०२०.
की मंगल कामनाओं सहित।


## दोहे धरम के

नमस्कार उनको करूं जो सम्यक् सम्बुद्ध।
जो भगवत, अरहन्त जो, जो पावन परिशुद्ध॥

इस श्रद्धायुत नमन से, चित्त विमल हो जाय।
अहं भाव सब दूर हो, विनय भाव भर जाय॥

श्रद्धा उमड़ी बलवती, श्रद्धाभाजन बुद्ध।
मिली प्रेरणा, बल मिला, करूं चित्त निज शुद्ध॥

चित्त निपट निर्मल रहे, रहूं पाप से दूर।
यही बुद्ध की वन्दना, रहे धरम भरपूर॥

चलते चलते धरम-पथ, चित्त शुद्ध यदि होय।
तो सम्यक् सम्बुद्ध का, समुचित पूजन होय॥

पग पग पग चलते हुए, होंय दुखों के पार।
पारायण ही धरम है, विमल धर्म लें धार॥

## दूहा धरम रा

नमन करूं मैं बुद्ध नै, किसा क करुणागार।
दुक्ख निवारण पथ दियो, सुखी करण संसार॥

आ ही साची बन्दगी, नमस्कार, परणाम।
जीऊं जीवन धरम रो, करूं न कूड़ा काम॥

आज बुद्ध रो दिवस है, जगै बोधि री जोत।
जन जन मन जगमग हुवै, मिलै सुखां रो स्रोत॥

भटकत भटकत बीतती, मिनख जूण री खोळ।
जै बुधजी ना बांटता, धरम रतन अनमोळ॥

बुधजी थारी बोधि रो, किसोक मंगल घोस।
सूत्यां नै जाग्रण मिलै, मदहोसां नै होस॥

बोधि महामहिमामयी, माटी सुबरण होय।
कांकर तो हीरा हुवै, पाथर पारस होय॥


सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक : रामप्रताप यादव, ग्रीन हाऊस, २ री मंजिल, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई २३. टेलीफोन : ३१३५१०. ● मुद्रण स्थान : अक्षरचित्र मुद्रणालय, धानपुर, नासिक ४२२ ००७. टेलिफोन ८२५१ ●
पत्रिका में विज्ञापन दर : आधा पृष्ठ रू. ४००/-, चौथाई पृष्ठ रू. २०० /- ● वार्षिक शुल्क रू. ५/-, आजीवन शुल्क रू. ५१/-

"विपश्यना"
रजि. नं. NSK-64

License No. NS 18
Licensed to post without pre-payment

प्रेषक :
सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट
विपश्यना विश्व विद्यापीठ
धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२ ४०३.
(नासिक, महाराष्ट्र)

To